अंक - 3

सुरभि

हिन्दी विभाग

2025-2026

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. प्रशांत देशपांडे

संपादकीय सदस्य

डॉ वृषाली चौघुले

डॉ संदेशा भावसार

कु. सेजल जैसवार

कु. ज़ेबा शाह

प्राचार्य का संदेश

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा निरंतर उत्कृष्ट साहित्यिक कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में ‘सुरभि 2026-27’ का प्रकाशन विभाग की सृजनात्मकता और प्रतिबद्धता का सुंदर उदाहरण है। इस उपलब्धि के लिए मैं हिन्दी विभाग को हार्दिक बधाई देती हूँ।

विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न साहित्यिक एवं बौद्धिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इससे उनकी अभिव्यक्ति और रचनात्मकता का विकास होता है।

‘सुरभि’ पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा व्यक्त करने का प्रभावी मंच प्रदान करती है। यह उन्हें सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरित करती है और साहित्य के प्रति उनकी रुचि बढ़ाती है।

मैं हिन्दी विभाग के प्रमुख डॉ. प्रशांत देशपांडे तथा विभागीय प्राध्यापकों –
डॉ. संदेशा भावसार और डॉ. वृषाली चौघुले को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

डॉ. अर्चना पत्की
प्राचार्य

संपादकीय

महाविद्यालय का हिन्दी विभाग सदैव विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं के विकास हेतु तत्पर रहा है। विभाग प्रतिवर्ष विविध भाषिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन कर विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान करता है। इसी उद्देश्य से 'सुरभि' पत्रिका का प्रारंभ किया गया, जिससे इन गतिविधियों का दस्तावेजीकरण हो सके तथा शिक्षक और विद्यार्थी सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरित हों।

पिछले वर्षों में प्रकाशित 'सुरभि' को जिस प्रकार सराहना मिली है, वह हमारे लिए अत्यंत उत्साहजनक है। इसी क्रम में 'सुरभि - 2026-2027' का यह अंक प्रस्तुत है। हमें विश्वास है कि यह संस्करण भी पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करेगा और सृजनशीलता को नई दिशा देगा।

इस कार्य को सफल बनाने में जिन सभी महानुभावों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया, उनके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अर्चना पत्की के सतत मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

सादर धन्यवाद!

डॉ. प्रशांत देशपांडे

अनुक्रमणिका

1. मेरी आवाज मेरी पहचान - रितिका श्रीवास्तव, बी.ए. तृतीय वर्ष (कविता)

2. मैं कौन हूँ - खान आफरिन, बी.ए. प्रथम वर्ष (कविता)

3. रिश्ते - आंचल पटेल, बी.ए. तृतीय वर्ष (कविता)

4. गुस्से की कीमत - नाजरीन खान, बी.ए. प्रथम वर्ष (कहानी)

5. यह शाम ढली नहीं, बस ठहर गई....- सेजल जैसवार, बी. ए. तृतीय वर्ष (कहानी)

6. कुछ खो गया है क्या? - ज़ेबा शाह, एम.ए. द्वितीय वर्ष (कविता)

7. क्या जाने यह यंत्र जहां - मीनाक्षी शुक्ला एम.ए. द्वितीय वर्ष (कविता)

8. टूटी हुई दोस्ती - अंजू गुप्ता, तृतीय वर्ष हिन्दी (कहानी)

9 . हिन्दी विभाग की साहित्यिक गतिविधियाँ

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पवित्र भावना में निहित है।

भारत की एकता का मुख्य आधार एक संस्कृति है, जिसका प्रवाह कहीं नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है। भारतीय एकता अक्षुण्ण है क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरंतर बहती रही है और बहेगी। – मदन मालवीय

मदनमोहन मालवीय, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

- हरिवंशराय बच्चन

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,

रात-सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,

क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
में उषा है मुसकराती,
घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पंक्ति गाती;

एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती!

नाश के दु:ख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

मेरी आवाज मेरी पहचान

सुबह - सवेरे वह उठ जाती
आंगन में शोर मचाती
घास मिल जाने पर खुश वह हो जाती
माँ जैसी है, माँ ही समझे उसको
सबको अपना दूध पिलाती
पहले-पहले जब देखा उसको
अपना सिर हिलती थी
आँखों में है आँसू
माँ जैसी दिख जाती है
अब वह माता-माता नहीं
सड़कों पर देखा जाती है
कचरे और प्लास्टिक से अपनी भूख मिटाती है
जब वह देती दूध, तो लगती सबको अपनी-सी
जब वह हो जाती बुढ़ी, तो सबको लगती बोझ-सी
पहले - लगती तुमको मैं अपनी माता-सी,
तुम पूजते थे हमको गौ माता-सी
अब न वह पूज़ा रही, ना वह भक्ति रहीं
लगती मैं तुमको पराई-सी|
हे मानव! तू कितना दुष्ट दानव निकला
अगर हमको तू अपना समझता
तो हमको ऐसे सड़कों पर न छोड़ देता|

रितिका श्रीवास्तव,
बी.ए. तृतीय वर्ष

मैं कौन हूँ

मैं कोई नाम नहीं
न कोई सीमा, न परिभाषा।
मैं हूँ वो स्वर,
जो चुप्पी को भी तोड़ देता है।
मैं हवा की तरह स्वतंत्र,
आग की तरह तेज,
और धरती की तरह अटल हूँ।
मुझे किसी उपाधि की जरूरत नहीं,
क्योंकि मेरी पहचान
मेरे कदमों की आहट में है,
मेरे शब्दों की गूंज में है।
मैं वही हूँ-
जो सपनों को सच कर सके,
जो मुश्किलों को राह बना सके।
अगर मुझे देखना चाहो,
तो आईने में मत ढूँढो
मेरे शब्दों में खोजो,
मेरे हौसले में पहचानो।

खान आफरिन,
बी.ए. प्रथम वर्ष

रिश्ते

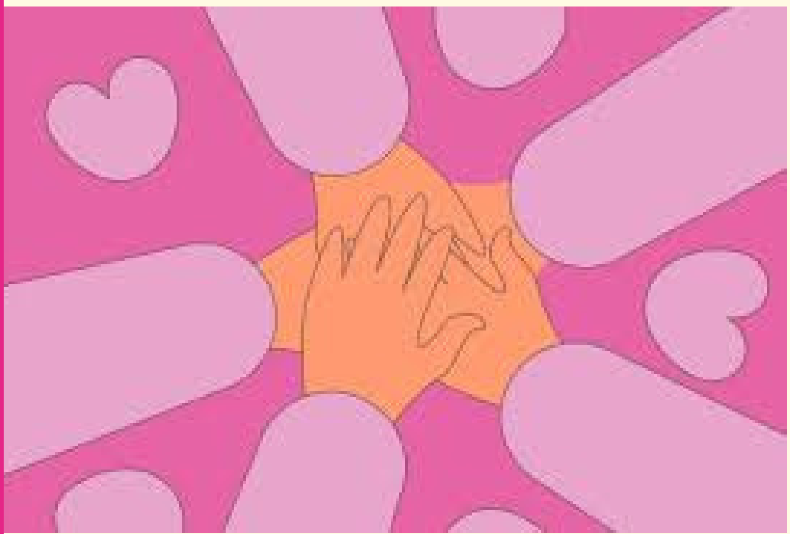

रिश्ते तितली जैसे होते हैं,
नाजुक से ये धागे होते हैं।
जोर से पकड़ी तो मर जाते,
ढीला छोड़ो तो उड़ जाते।
प्यार से इनको थामोगे
रंग ये अपने दे जाएंगे,
दिल के कोने-कोने में
मीठी खुशबू भर जाएंगे।
सच्चे रिश्तों की यही पहचान,
पहले समझो, फिर दे मान।
बिन समझे जो ठुकराते,
रिश्ते अक्सर टूट ही जाते।
एक बार जो भरोसा टूटे,
फिर ना पहले जैसे छूटे।
पहली वाली बात कहाँ,
रह जाती बस मीठी याद वहाँ।
मैं तो बस उतना जिम्मेदार,
जितना बोला मैंने यार,
जो तुमने खुद समझ लिया,
उसका मुझसे क्या सरोकार।
रिश्ते जोड़ना एक कला है,
निभाना सबसे बड़ी कला है,
जो दिल से रिश्ते निभाते
वो यादों में बस जाते।

आंचल पटेल,
बी.ए. तृतीय वर्ष

गुस्से की कीमत

एक छोटे से गाँव में सोनी नाम की एक लड़की रहती थी। वह साधारण परिवार से थी, लेकिन उसके सपने असाधारण थे। सोनी बहुत मेहनती और समझदार थी। जो भी काम वह सीखना चाहती थी, पूरे मन से सीखती थी और बहुत जल्दी उसमें निपुण हो जाती थी। उसके गाँव में सिलाई और डिज़ाइनर कपड़े बनाने का कोई ज्ञान नहीं था, लेकिन सोनी को बचपन से ही कपड़ों की सिलाई का बहुत शोक था। वह चाहती थी कि कुछ अलग करे, कुछ ऐसा जो न सिर्फ उसके परिवार के काम आए, बल्कि गाँव की लड़कियों के लिए भी रास्ता खोल दे।

इसी सपने को पूरा करने के लिए वह कुछ समय के लिए मुंबई गई, जहाँ उसके रिश्तेदार थे। वहाँ जाकर उसने सिलाई सीखना शुरू किया। शहर का माहौल नया था और काम कठिन था, लेकिन सोनी ने हिम्मत नहीं हारी। सिर्फ एक महीने में ही उसने सिलाई की बुनियादी और उन्नत तकनीकें सीख लीं, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। अचानक उसे गांव लौटना पड़ा, क्योंकि उसके माता-पिता की देखभाल करने वाला उसके अलावा कोई और नहीं था। बिना शिकायत किए, अपने सपनों को कुछ समय के लिए रोककर सोनी गाँव वापस आ गई।

गाँव लौटने के बाद उसने अपनी सहेलियों को बताया कि वह सिलाई सीख चुकी है। इसकी बातें सुनकर गाँव की लड़कियाँ बहुत प्रभावित हुई। सोनी ने निस्वार्थ भाव से सबको सिलाई सीखाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे पूरे गाँव की लड़कियाँ उसके पास सीखने आने लगीं।

सोनी खुद भी सुंदर और डिज़ाइनर कपड़े सीलने लगी। उसकी मेहनत रंग लाई और उसने अपना छोटा-सा बुटीक खोल लिया। यह बुटीक सिर्फ उसकी रोजी रोटी नहीं था, बल्कि गाँव की लड़कियों के आत्मसम्मान और आत्मनिर्भर का केंद्र बन गया। कई साल तक सब कुछ अच्छे से चलता रहा। लेकिन समय के साथ परिस्थितियों फिर बदल गई। उसके पिता की उम्र बढ़ने लगी और उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ने लगी। वे छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करने लगे, घर में झगड़े बढ़ने लगे और सोनी को भी अपशब्द कहने लगे। सोनी सब कुछ चुपचाप सहती रही। वह जानती थी कि यह बीमारी का असर है, इसलिए उसने कभी जवाब नहीं दिया, लेकिन अंदर ही अंदर वह टूटती जा रही थी।

एक दिन लगातार तनाव, झगड़ों और दबे हुए दर्द ने उसे बहुत कमजोर कर दिया। उस पल के गुस्से और निराशा में उसने एक ऐसा कदम उठा लिया, जिससे उसकी ज़िंदगी हमेशा के लिए खत्म हो गई। उस एक क्षण ने उसकी वर्षों की मेहनत, उसके सपने और उसका बुटीक सब कुछ छीन लिया।

आज भी गाँव की लड़कियाँ सोनी को याद करती है। वे उसे एक सिलाई सिखाने वाली नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक के रूप में याद करती हैं- जिसने उन्हें मुक्त में हुनर सिखाया, आत्मनिर्भर बनना सिखाया और आगे बढ़ने की हिम्मत दी।

नाजरीन खान, बी॰ए॰ प्रथम वर्ष

यह शाम ढली नहीं, बस ठहर गई....

शहर की उस ऊँची छत पर सूरज धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था। आसमान नारंगी और सुनहरे रंगों से भरा था। भैया चुपचाप मुंडेर के पास खड़े थे और भाभी उनके पास ही बैठी डायरी में कुछ लिख रही थी। यह शाम वैसी ही भी, जैसे कई साल पहले थी। जब दोनों की नई-नई शादी हुई थी।

उस वक्त शाम का मतलब सिर्फ प्यार और चाहत होता था। साथ में चाय पीना, भविष्य के सपने बुनना और हंसना। लेकिन वक्त हमेशा एक जैसा नहीं होता है। जिंदगी में मोड़ तब आया, जब जिम्मेदारियों और हालात ने दोनों के बीच दूरियां पैदा करने की कोशिश की। काम के सिलसिले में भैया को दूर जाना पड़ा था। वह 'बिछड़ने का दौर सबसे कठिन था।

भाभी अक्सर कहती थी, "यह शाम ढल क्यों जाती है? काश वक्त यहीं रुक जाता। लेकिन भैया ने उन्हें एक नई प्रेरणा दी। उन्होंने सिखाया कि शाम का ढलना अंत नहीं है, बल्कि एक नई सुबह की तैयारी है। बिछड़ना हमें यह अहसास करने के लिए होता है कि मिलने की कीमत क्या है?

आज सालों बाद जब वे दोनो फिर से साथ है, तो उस ढलती शाम में एक अलग ही दशर्न था। भाभी में डायरी बंद की और भैया की तरफ देखकर मुस्कराई। अब शाम ढलने का डर नहीं था, क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि प्यार सिर्फ साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे की ढाल बनने का नाम है। भैया ने भाभी का हाथ थामकर कहा, "देखो, सूरज ढल रहा है, पर रोशनी हमारे भीतर है। कल फिर एक नई सुबह होगी, एक नई उमंग के साथ।

उस शाम ने सिखाया कि प्यार में बिछड़ना 'धूप' है, तो साथ आना ‘छांव’ और आगे बढ़ते रहना ही असली ‘जीवन’ हैं। छत पर अंधेरा तो हुआ, पर उनके दिलो में उम्मीद का दीया जल रहा था।

सेजल जैसवार, बी॰ए॰ तृतीय वर्ष

कुछ खो गया है क्या?

कुछ खो गया है क्या?
क्यों हो उदास, क्या खो गया है,
जो मिला था, यहीं से मिला है।
जो तुम्हारा है, लौट आएगा,
जो नहीं, हाथों से भी चला जाएगा।
पाना-खोना जग की रीत है,
हर हार के बाद ही तो जीत है।
मोह-माया के जाल में मत उलझो,
ये नशा है, जो बढ़ता ही जाता है।
दौलत-शोहरत दूर से सुहानी,
पास आकर चुभती कहानी।
भागते-भागते मिलती मंज़िल,
पर राह में बहुत कुछ छूट जाता है।
जो है, जितना है, उसमें जी लो,
अनावश्यक चिंता सब छोड़ दो।
जो होना है, होकर रहेगा,
सोच-सोच कर क्या कर लोगे।
अंत में यही सच्चाई है—
सब कुछ यहीं रह जाएगा,
इसलिए हर हाल में मुस्कुराओ

ज़ेबा शाह,
एम॰ए॰ द्वितीय वर्ष

क्या जाने यह यंत्र जहां

ना पाया, मान ना पाया ,
तू मुझको पहचान ना पाया,
बिंदु से निकला हूं मैं ,
अनंत ब्रह्मांड में बिखरा रहा मैं,
आरंभ कहां है ? अंत कहां ,
क्या जाने यह यंत्र जहां ??

काले से भी काला हूं , गहरे से भी गहरा,
काले छिद्र का राजा हूं , जहां पहुंचे हो जाए सब बेहरा ,
काले छिद्र में राज्य है , लगे वहां क्यों पानी ?
धूमकेतु का लंबा मार्ग जैसे कथा पुरानी ,
सूर्य यहां है , चंद्र यहां ,
क्या जाने यह यंत्र जहां??

मेरा अनंत गहरा आंचल तारों का जगमग हार है,
रहस्य छिपा कोई भीतर गहरा , जैसे कोई पुकार है।।
तैरते ग्रह नक्षत्र यहां होकर धूल में मगन ,
कौन देश से आवे तरंग अचरज लगे हर एक क्षण,

कैसे चमके टिम टिम तारे कैसे बुझे अचानक,
खोज खोज कर खोज ना पाया,
मानव तो यह एक पहेली भयानक,

धूल गैस चुंबक वितरण से ऐसा अद्भुत रूप बनाया,
ढूंढ ढूंढ कर ढूंढते तेरा यान समझ ना पाया,
घेर घेर कर तूने मुझ पर ऐसा घेरा डाला ,
जाने कितने यानों का मलबा यह पसारा।

ऐसा अनोखा राज्य है मेरा ,
चले नहीं जहां किसी का डेरा ,
पर तेरे अंतरिक्ष अभियानों से लगता मुझको है अब डर!
कभी अपोलो, कभी चंद्र कभी शुक्र, कभी मंगल बन,
जो आता है बच बचकर मैं कैसे संभालूं?
समझ मुझे नहीं आता है ।।

सूर्य ,चंद्र, खगोल ,सितारे
हिल मेरे रहते यही बेचारे,
टिम टिम करते तारे देखो
लगते कैसे प्यारे प्यारे
इन तारों का ही तंत्र यहां
क्या जाने यह यंत्र कहां ...??

मीनाक्षी शुक्ला एम ए हिन्दी द्वितीय

टूटी हुई दोस्ती

करीब 10 साल पहले की बात है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। मेरी एक बहुत ही प्रिय सहेली थी—ज्योति। हम दोनों रोज साथ स्कूल आते-जाते थे। हमारी दोस्ती इतनी गहरी थी कि हम एक-दूसरे के बिना खुद को अधूरा महसूस करते थे। हम अपनी हर खुशी और हर दर्द एक-दूसरे से साझा करते थे। ज्योति बहुत होशियार और सपने देखने वाली लड़की थी। वह हमेशा कहती थी— "देखना, एक दिन मैं बहुत बड़ी बनकर दिखाऊँगी, हम दोनों साथ में आगे बढ़ेंगे।" लेकिन समय ने अचानक ऐसा मोड़ लिया कि सब कुछ बदल गया। आर्थिक परेशानियों के कारण ज्योति को मुंबई छोड़कर अपने गाँव जाना पड़ा। वह दिन मेरे लिए बहुत दुखद था। जाते समय वह मुझे गले लगाकर रो रही थी और कह रही थी— "मुझे मत जाने दो... मैं यहीं रहना चाहती हूँ।" लेकिन हम दोनों ही मजबूर थे। न उसके पास कोई सहारा था और न मेरे पास उसे रोकने का कोई साधन। और इस तरह हमारी प्यारी दोस्ती दूर हो गई।

समय बीतता गया। उस समय मोबाइल न होने के कारण हमारा संपर्क भी टूट गया। कई सालों तक उसकी याद मुझे अंदर से दुख देती रही। फिर एक दिन, जब मैं दसवीं कक्षा में थी, अचानक एक अनजान नंबर से फोन आया। जैसे ही मैंने फोन उठाया, दूसरी तरफ ज्योति थी। लेकिन उसकी आवाज बहुत दर्दभरी और रोती हुई थी। वह कांपती आवाज में बोली— "मेरी जिंदगी बहुत मुश्किल हो गई है... मेरे सारे सपने टूटते हुए लग रहे हैं।"

मुझे बाद में पता चला कि उसकी शादी उसकी इच्छा के खिलाफ कर दी गई थी। उसका वैवाहिक जीवन बहुत कठिन था। उसे कई तरह की परेशानियों और संघर्षों का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन ज्योति ने हार नहीं मानी। जब उसने एक बेटी को जन्म दिया, तो उसके अंदर एक नई शक्ति जागी। उसने अपने आप से कहा— "जो मेरे साथ हो रहा है, मैं अपनी बेटी के साथ ऐसा नहीं होने दूँगी।" उसने अपने जीवन को संभालने की कोशिश की। वह खुद पढ़ाई भी करती है और अपनी बेटी को भी अच्छी शिक्षा दे रही है। धीरे-धीरे उसने अपने जीवन को एक नई दिशा दी और मजबूत बनकर आगे बढ़ रही है।

अंजू गुप्ता, तृतीय वर्ष हिन्दी

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

दिनांक – 20 सितंबर, 2025 को हिन्दी दिवस के अवसरपर आयोजित हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया था| जिसमें डॉ वेदप्रकाश दुबे जी उपस्थित थे| उन्होंने हिन्दी भाषा के विकास की संभावनाओं की चर्चा करते हुए चुनौतियों पर प्रकाश डाला|

गुरु पौर्णिमा का आयोजन - 10/07/2025

मुशी प्रेमचंद जयंती का आयोजन - 31 /7/ 2025

मुशी प्रेमचंद जयंती – 31 /7/ 2025

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं।

मुंशी प्रेमचंद

विस्तार गतिविधि (Extension Activity) का आयोजन

हिन्दी विभाग द्वारा 22/08/2025 को डोंगरी, सैंडहर्स रोड (पश्चिम) में विस्तार गतिविधि (Extension Activity) का आयोजन किया गया था| इस गतिविधि में 2 प्राध्यापकों और 05 विद्यार्थियों ने भाग लिया था|

धन्यवाद